हिलोरें लेती चिति, सूर्योदय से सूर्यास्त तक

श्रीगुरुमाई के जन्मदिन महोत्सव का वृत्तान्त

२४ जून, २०१८

श्री मुक्तानन्द आश्रम

भाग २

शालीनता से गतिमान

गुरुमाई जी के जन्मदिन महोत्सव २०१८ के प्रतिभागियों द्वारा

श्रीगुरुगीता के मूलपाठ के साथ सत्संग के उपरान्त, लोगों द्वारा बनाई गई जन्मदिन की समय-सारिणी में शामिल था, अन्नपूर्णा रसोई में सेवाकर्ताओं द्वारा बनाया गया शानदार नाश्ता। उनके बनाए स्वादिष्ट व्यंजनों की सुगन्ध श्रीनिलय के बाहर तक आ रही थी, मानो हमें अन्नपूर्णा भोजन-हॉल में आने का न्यौता दे रही हो।

श्रीगुरुगीता पाठ के आनन्द में झूमते, अन्तर में अब भी प्रतिध्वनित होते उसके मन्त्रों के स्पन्दनों में डूबे हुए, जब हम अन्नपूर्णा भोजन-हॉल में पहुँचे तो वहाँ हमारा स्वागत करने के लिए मौजूद थीं रंगों, खुश्बुओं और विभिन्न रूप-आकारों की लुभावनी पंक्तियाँ। लम्बाई में, भोजन-हॉल के क़रीब तीन-चौथाई से भी अधिक भाग को घेरे हुए, खाने की मेज़ इस दिन के अनुरूप भोज के नाश्ते से सजी हुई थी।

हम कल्पना कर सकते हैं कि आपका कौतुक कितना बढ़ रहा होगा — आप यह जानने के लिए उत्सुक होंगे कि इस भोज में आख़िर था क्या-क्या! ठीक है तो हम आपको वह सब कुछ बताते हैं जो हमें याद आ रहा है। सर्वप्रथम, सिद्धयोग आश्रम का सबसे प्रसिद्ध पकवान : अदरक और मसालों की सुगन्ध वाला स्वादिष्ट गरम-गरम दलिया यानि सेवरी सीरियल। फलों और फूली-फूली किशमिशों से सजी लज़्ज़तदार म्यूसली भी थी। और क्या था? सुनहरे भूरे तले और चाश्नी में डुबोए हुए डोनट! अखरोट

जैसे एक मेवे और चॉकलेट की परत से सजे क्रोसॉन! अलग-अलग प्रकार की स्वादिष्ट चीज़ (Cheeses) की तश्तरियाँ! ग्रीष्म ऋतु के मौसमी फल — माणिक के रंग की चैरी, हरे और जामुनी अँगूर और सुनहरे आम की फाँकें! जैम और मक्ख़न के कटोरे! और हाँ, गरम-गरम चाय और सिद्ध कॉफ़ी के प्याले!

स्टाफ़ के एक सदस्य ने बताया :

> सब कुछ देखने में भी और खाने में भी बहुत ही स्वादिष्ट था। मैंने सुना है और बार-बार यह महसूस भी किया है कि आप खाने में उन भावनाओं को चख सकते हैं जो उसे बनाते समय खाना बनाने वालों के मन में उठ रही होती हैं। हर निवाले के साथ मेरा मन अधिकाधिक प्रसन्नता से, अधिकाधिक खुशी से सराबोर होता जा रहा था। और मुझे पता था : निश्चित ही, हाँ निश्चित ही गुरुमाई जी के जन्मदिन महोत्सव पर यह शानदार नाश्ता बनाते समय बावर्ची अपूर्व आनन्दोल्लास का अनुभव कर रहे थे।

इन व्यंजनों का आनन्द लेते समय, हम गुरुमाई जी के प्रेम को प्रकटरूप में महसूस कर रहे थे। जैसे प्रातः की आरती और श्रीगुरुगीता के पाठ ने हमारे अन्तःकरण को पोषित किया था, उसी तरह इस नाश्ते ने हमारे शरीर का पोषण किया, जिससे हम गुरुमाई जी के इस दिन को अपना सर्वोत्कृष्ट अर्पित कर सकें।

नाश्ते के बाद, हम गुरुमाई जी के जन्मदिन के अगले कार्यक्रम के लिए अन्नपूर्णा भोजन-हॉल को नया रूप देने लगे। हमने झाड़ू लगाई, कोने-कोने को साफ़ किया, कुर्सियाँ और मेज़ दूसरी जगह रखे, वैक्यूम-क्लीनर से कालीन को साफ़ किया, फ़र्श पर पोंछा लगाया और उन सभी चीज़ों को यथास्थान रखा जो जल्द ही होने वाले जन्मदिन का केक काटने के कार्यक्रम के लिए उपयोग में आने वाली थीं।

आत्मनिधि बिल्डिंग के दूसरे भागों में भी रोमांच का यही माहौल था। हम सब तैयारियाँ कर रहे थे और प्रसन्नतापूर्वक गुरुमाई जी के आने की राह देख रहे थे। हममें से कई नीचे की लॉबी में, निधि चौक में और अन्नपूर्णा भोजन-हॉल में एकत्र थे और भूपाली राग में 'ॐ नमो भगवते मुक्तानन्दाय' की धुन गा रहे थे। हवा में प्रतीक्षा की मीठी महक थी। हम अपनी परमप्रिय गुरुमाई जी का स्वागत करने के लिए तैयार थे। नामसंकीर्तन आनन्द और भक्ति से जगमगा रहा था। एक प्रतिभागी ने कहा कि संकीर्तन की इस प्रेमल शक्ति के माध्यम से उसे गुरुमाई जी के साथ निकटता का अनुभव हो रहा था।

जब हमने सुना कि गुरुमाई जी बस अब आने ही वाली हैं तो ऐसा लगा मानो नामसंकीर्तन शुरू हुए अभी मात्र पलभर ही बीता है! वे उस मार्ग पर चलकर आत्मनिधि की ओर आ रही थीं जो शिव नटराज की मूर्ति की ओर ले जाता है। स्टाफ़ के एक सदस्य ने अपना अनुभव याद करते हुए कहा :

मैंने दूर से देखा कि गुरुमाई जी आत्मनिधि के सामने वाले द्वार की ओर जाने वाले मार्ग पर बढ़ रहीं हैं। इस क्षण में मेरा हृदय उत्सुकता से ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था और साथ ही बिलकुल स्थिर और प्रशान्त भी था। मैंने क्षणभर के लिए अपनी आँखें बन्द कीं और अपनी गुरु के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए अपना सिर नवाया। एक क्षण की यह प्रशान्ति, प्रणाम करने का यह सुअवसर पाकर मेरी सत्ता में शक्ति की एक लहर-सी दौड़ गई जो दिनभर मेरे साथ बनी रही। महोत्सव का यह भाग मेरे लिए एक सर्वोत्कृष्ट भाग था!

गुरुमाई जी शिव नटराज की मूर्ति की ओर बढ़ती गईं। कुछ सिद्धयोगी जो आश्रम के सामने गुरुमाई जी का स्वागत करने के लिए खड़े थे, उनके पीछे-पीछे चल रहे थे। वे सभी शिव नटराज की मूर्ति के चारों ओर खड़े हो गए और 'जय जय शिव शम्भो, महादेव शम्भो' का नामसंकीर्तन करने लगे। आसमान बादलों से ढँका हुआ था। सुहावनी हवा में हलकी गुलाबी गर्मी थी। मन्द-मन्द बहती हवा का पंख जैसा नर्म स्पर्श, कृपा के मख़मली कवच समान लग रहा था। प्रभु की कल्याणकारी कृपा दृष्टि के तले मानो समय ठहर सा गया था और गुरुमाई जी का जन्मदिवस महोत्सव गति पकड़ रहा था।

©२०१८ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

क्रमशः . . .